B.Ed. 1st Year
Session – 2019-2020/2021
Subject – Pedagogy of Social Science
Course – 7 (A) /Unit – 2(d)
Topic – पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धांत
(Fundamental Principles of Curriculum Construction)
Lecture No. - 41

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

Continued from the previous lecture....

9. **विषयों के सह-संबंध का सिद्धांत (Principle of Correlation of Subjects)** - ऐसा पाठ्यक्रम प्रभावहीन हो जाता है , जिसके विषयों का एक -दूसरे से कोई संबंध नहीं होता है। अतः किसी भी पाठ्यक्रम में सभी वषयों में सह -संबंध होना चाहिये। इससे बालक को ज्ञान के समग्र रूप से परिचित होने का अवसर प्राप्त होता है।

10. **अनुभवों की पूर्णता का सिद्धांत (Principle of Totality of Expreriences)** – पाठ्यक्रम के अंतर्गत सैद्धातिक विषयों के साथ-साथ मानव जीवन के उन सभी अनुभवों को उचित स्थान मिलना चाहिए जिन्हे बालक स्कूल में , खेल के मैदान में, कक्षागृह में, पुस्तकालय में, प्रयोगशाला में तथा शिक्षकों के साथ अनौपचारिक संपर्कों द्वारा सीखता है। माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार , पाठ्यक्रम का अर्थ केवल सैद्धांतिक विषयों से नहीं लिया जाता ,वरन् उसमें अनुभवों की संपूर्णता निहित होती है।

11. **विविधता एवं लचीलेपन का सिद्धांत (Principle of Variety and Elasticity)** – प्रत्येक बालक की रूचियाँ, आवश्यकताएँ, योग्यताएँ, अभीवृत्तियाँ, मनोवृत्तियाँ आदि एक -दूसरे से भिन्न होती हैं। इस विभिन्नता का ध्यान रखते हुए पाठ्यचर्या में विविधता एवं लचीलापन होना चाहिए। माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार, पाठ्यक्रम में विविधता एवं लचीलापन होना चाहिए , जिससे कि वैयक्तिक विभिन्नताओं, वैयक्तिक आवश्यकताओं तथा रूचियों का अनुकूलन किया जा सके।

12. **सामदायिक जीवन से संबंध का सिद्धांत (Principle of Relationship with Community Life)** – पाठ्यक्रम का सामुदायिक जीवन से सीधा संबंध होना चाहए। अतः पाट्यक्रम का निर्माण करते समय स्थानीय आवश्यकताओं एवं पिरिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उन सभी सामाजिक प्रथाओं, मान्यताओं, तथा समस्याओं को स्थान मिलना चाहिए जिनसे बालक सामुदायिक जीवन की मुख्य बातों से परिचित हो सकें। माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार , पाठ्यक्रम सामुदायिक जीवन से सजीव तथा आंगिक रूप से संबंधित होना चाहिए।

13. **स्वस्थ आचरण के आदर्शों की प्राप्ति का सिद्धांत (Principle of Achievement of Wholesome Behaviour Pattern)** – पाठ्यचर्या में उन क्रियाओं, वस्तुओं तथा विषयों को स्थान मिलना चाहिए जिनके द्वारा बालक दूसरों के साथ प्रशंसनीय व्यवहार करना सीख सकें। क्रो एवं क्रो के अनुसार , पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार किया जाना चाहिए , जिससे यह बालकों को उत्तम आचरण के आदर्शों की प्राप्ति में सहायता दे सके।

14. **अवकाश के लिए प्रशिक्षण का सिद्धांत (Principle of Training for Leisure)** – अवकाश काल का सदुपयोग करना भी अपने-आप में एक कला है। इसलिय माध्यमिक शिक्षा आयोग का विचार है, पाठ्यक्रम इस प्रकार नियोजित किया जाना चाहिएकि यह छात्रों को न केवल कार्य के लिये वरन् अवकाश के लिये भी प्रशिक्षित करे।

(समाप्त)